INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर्यावरणीय शिक्षा

डॉ. राम सागर

असिस्टेंट प्रोफेसर,

गौरेश्वर नारायण सिंह

टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, औरंगाबाद

आज भारत ही नहीं विश्व के सभी देशों में जलवायु परिवर्तन के कारण या पर्यावरण में जो परिवर्तन हुआ है इससे विश्व के पर्यावरण संगठनो तथा शिक्षण संस्थानों को पर्यावरण संरक्षण पर अपना ध्यान देना बहुत जरूरी है इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनिवार्य रूप से सभी विश्वविद्यालयो में चाहे वह इंजीनियरिंग, मेडिकल या यूजी, पी.जी. के पाठ्यक्रम हो अनिवार्य रूप से पर्यावरण शिक्षा को लेकर एक कामन पेपर की परीक्षा पास करना बहुत जरूरी कर दिया गया है ताकि छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को फैलाया जा सके।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में अध्ययन प्रो.जगदीश कुमार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिश के तहत पर्यावरणीय शिक्षा को अनिवार्य रूप से शैक्षणिक सत्र 2023 से 2024 से स्नातक प्रोग्राम के सभी छात्रों को पर्यावरण विषय की पढ़ाई करना अनिवार्य कर दिया गया है। सामान्य इंजीनियरिंग, मेडिकल, फार्मेसी, मैनेजमेंट इत्यादि कोर्स के छात्र पर्यावरण की पढ़ाई करेंगे। इसका मकसद अन्य विषयों के साथ छात्रों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है इस नई शिक्षा नीति में जो सिफारिश की गई है नौ विषय 30 घंटे की पढ़ाई और चार क्रेडिट होंगे। दरअसल N.E.P. में पर्यावरणीय शिक्षा को पाठ्यक्रम मे अतिआवश्यक या अनिवार्य माना गया है। पर्यावरण संरक्षण lrr~ fodkl के प्रति जागरूकता और समावेशी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे इसे संवेदनशील बनाया जा सकता है, इससे सामुदायिक जुड़ाव,सेवा पर्यावरणीय शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा के पर्यावरणीय आधार तैयार किये गये हैं।

स्नातक प्रोग्राम पाठ्यक्रम के नौ विषय को शामिल किया गया कुल 30 घंटे की क्लासरूम स्टडी एक विषय चार घंटे तथा अन्य 6 घंटे का है, पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम में :-

जलवायु परिवर्तन

प्रदूषण

अपशिष्ट प्रबंधन

स्वच्छता

जैव विविधता

वन्यजीव संरक्षण, इत्यादि।

के अलावा छात्रों को 30 घंटे की केसस्टडी के साथ फील्डवर्क भी करना होगा एक सेमेस्टर में एक क्रेडिट हासिल करना जरूरी होगा इसके साथ ही 30 घंटे में घंटे की क्लास रूम स्टडी और फील्डवर्क करना पड़ेगा।

1972 ई• में से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने की शुरुआत की थी ताकि विश्व के सभी नागरिक पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षण के प्रति जागरूक हो सके आगे चलकर विश्व के बहुत से सामाजिक कार्यकर्ता पर्यावरण के लिए तथा वृक्ष लगा कर दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया था। संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2024 में विश्व पर्यावरण दिवस का व्यीम भूमि बहाली मरुस्थलीकरण और सूखा लचीलापन है। भारत में पर्यावरण के संरक्षण को लेकर चिपको आंदोलन का नेतृत्व सुंदरलाल बहुगुणा ने किया था। बहूविषयक पढ़ाई पर्यावरण समझविकसित करने में मददगार, प्रयोगधर्मी शिक्षा भी अनिवार्य की गयी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि N.E.P. अपने समय से आगे का विचार और पिछले कुछ दशकों में भारत ने उसके आधार पर ही तीव्र आर्थिक प्रगति की लेकिन अब दुनिया में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इसमें परिवर्तन की जरूरत थी आज हमें जलवायु परिवर्तन जैसी नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग आज काफी अहम हो गया है। जब हम की बात करने लगे तो जरूरी है कि हमारी शिक्षा नीति में पर्यावरण जागरूकता पर विशेष जो रहो और शिक्षा समस्याओं को सुलझाने से जुड़ी हो हमें इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है, कि ऐसा क्यों है कि पर्यावरण के अच्छे व बुरे के बारे में बच्चों को पढ़ाए जाने के बावजूद समाज का व्यवहार नहीं बदला है, ज्ञान प्रदान करने के पारंपरिक तरीको ने वांछित परिणाम नही दिया हैं।

पर्यावरणीय समस्या का समाधान केवल प्रकृति के साथ ही नहीं बल्कि छात्रों को प्रकृति का साक्षात्कार दर्शन कराकर समझाया जा सकता है। तथा उन्हें वृक्षरोपण कराकर प्रायोगिक तौर पर समझाया जा सकता है। ताकि वे प्रकृति के प्रेमियों के रूप में विकसित हो सके पर्यावरणीय शिक्षा

का बेहतर तरीका यह है कि छात्र शिक्षक वर्ग के साथ जंगल एंव विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर सच्चाई का अनुभव करें हमें स्कूलों में गार्डन स्थापित करने चाहिए जो न केवल छात्रों को पर्यावरण से जोड़ेंगा बल्कि उन्हें उनके जीवन विज्ञान के पाठो को भी जीवन्त करेगा इस तरह का सीखना न केवल आसान है बल्कि स्थाई भी है। इसी तरह रिसाइक्लिंग पर व्यावहारिक कौशल, कचरे का निपटारा और छात्रों को जैविक खेती की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इन सब की बात इस शिक्षा नीति में की गई है।

N.E.P. 2020 में पर्यावरणीय जागरूकता जल और प्राकृतिक संसाधन का दोहन आवश्यकतानुसार करना चाहिए तथा भविष्यको ध्यान में रखते हुए करना चाहिए ताकि आने वाली पीढियां को इसका लाभ मिल सके तथा विभिन्न समुदायोंका पर्यावरणीय ज्ञान पर विशेष जोर दिया गया है पर्यावरणीय शिक्षा वर्तमान समय में बहुत ही आवश्यक है। तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अनावश्यक रूप से नहीं करना चाहिए जैव विविधता के संरक्षण में प्रबंधन, वन्यजीव संरक्षण, जलप्रदूषण, वायुप्रदूषण, ध्वनिप्रदूषण, मृदाप्रदूषण इत्यादि प्रदूषणों पर ध्यान दिया जाना चाहिए औद्योगिकरण वनगरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बेतहास किया जा रहा है। वर्तमान समय में देखा जाए तो हमारे देश की जनसंख्या विश्व प्रथम स्थान पर आ चुकी है तथा इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों की भी बहुत जरूरत पड़ती है। जब कि प्राकृतिक संसाधन सीमित है, हमारी जनसंख्या असीमित है।

हम जानते हैं कि भविष्य तथा वर्तमान के लिए स्वस्थ्य पर्यावरण बनाये रखना बहुत ही आवश्यक है यह तभी संभव हो सकता है जब हमारे देश के नागरिकों में इसके प्रति जागरूकता लाई जाए इसीलिए इस शिक्षा नीति में पर्यावरणीय शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया है। हाल के वर्षों में मशीनों और डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रगति के कारण पर्यावरणीय ज्ञान का प्रचार प्रसार तथा पहाड़ों पर सड़कों के निर्माण के कारण लगातार पहाड़ों का धसाव एंव भूस्खलन जैसी आपदाएं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। तथा इससे पर्यावरण संतुलन को क्षति पहुंचती है। पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान में अनुच्छेद 48क के अंतर्गत कानून बनाया गया है जिसमें वन्य जीव संरक्षण की सुरक्षा हो सके इस प्रकार से राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पर्यावरणीय शिक्षा सभी शिक्षण संस्थानों में अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पर्यावरणीय शिक्षा, सुरक्षा, संरक्षण के प्रति जागरूकता समझ को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण पहलू है। छात्रों को जागरूक बनाने के लिए इस नीति के निर्माताओं ने अपना ध्यान दिया कि पर्यावरणीय शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य मानव और पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों की जागरूकता बढ़ाना है शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को पारिस्थितिकीय संबंधों की जानकारी प्राप्त होती है मानव गतिविधियों का प्रभाव पर्यावरण पर पारिस्थितिक संतुलन को बिगड़ते हालातो को हमें समझना होगा पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से सतत्प्रयास करना पड़ेगा जिसे निम्न तरीके से दर्शाया गया है:-

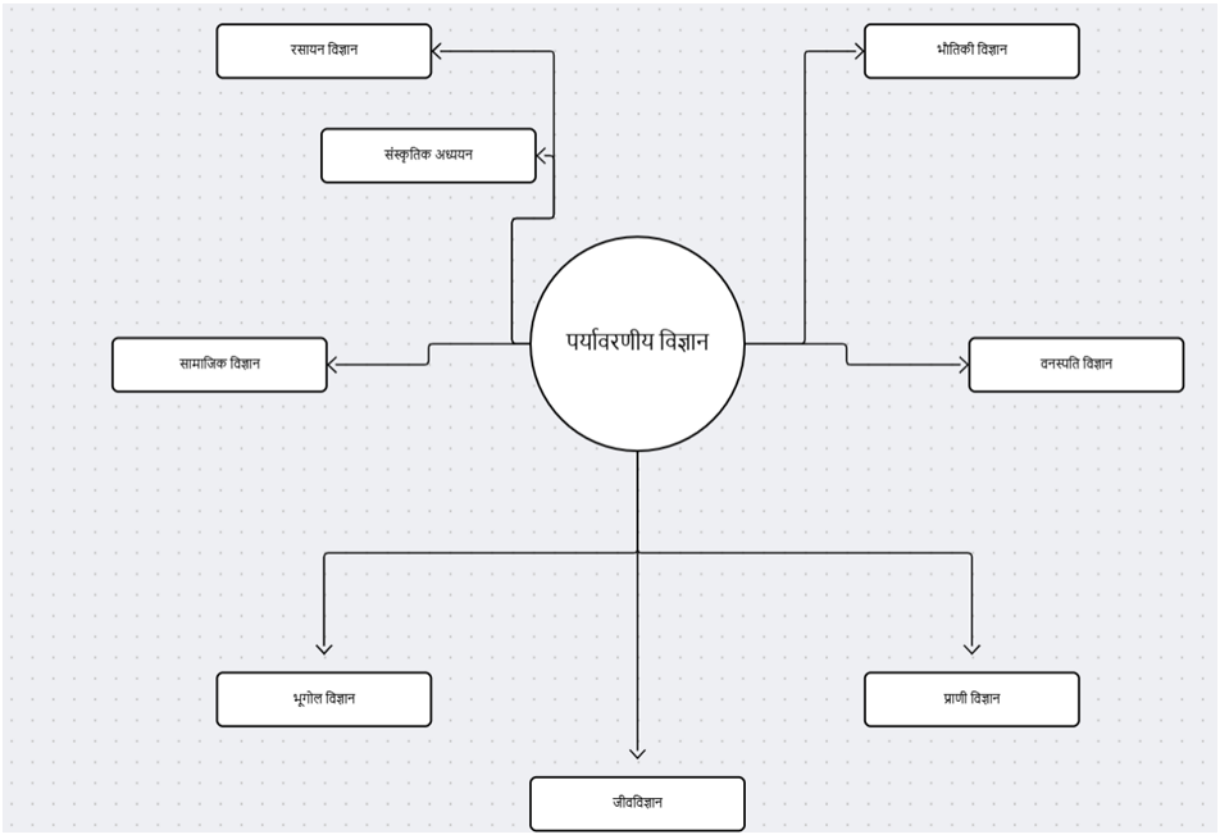

पर्यावरण शिक्षा केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं है यह समुदायो, कार्य स्थलों, मनोरंजन स्थलों इत्यादि विभिन्न परिसरों तक फैलती है यह शिक्षा व्यक्तियों को वित्तीय विकास के साथ-साथ वातावरणी यमुद्दों का विश्लेषण करने और नवाचारिक समाधानों की खोज में प्रोत्साहित करने के समर्थ बनती है। जागरूकता और प्रश्न समाधान कौशलों को बढ़ावा देने से पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्तियों को जागरूक करती है ताकि वे वातावरणीय मुद्दों का विश्लेषण करसके। पर्यावरणीय

शिक्षा की मुख्य भूमिका मानवो में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और संरक्षण की भावना को बढ़ावा है व्यक्तियों को सिखाया जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव विविधता की देखभाल इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही पर्यावरणीय शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के महत्वपूर्ण भूमिका को अदा करती है। यह विज्ञान अर्थ शास्त्र, समाजशास्त्र, नैतिक शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों से ज्ञान को एकत्र करने कर के पर्यावरणीय मुद्दों को हॉलिस्टिक समझ प्रदान करती है। इससे व्यक्तियों को वातावरणीय समस्याओं को कई परिप्रेक्ष से देखने और सामर्थशाली समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

पर्यावरणीय शिक्षा पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर जागरूक जिम्मेदार नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह ज्ञान कौशल और मूल्यों की प्राप्ति कराती है जो हमारे पर्यावरण के संकट का समाधान ढूंढने में मदद करती है। पर्यावरणीय शिक्षा का एक सतत् और संगठित दुनिया के लिए स्वस्थ वातावरण का निर्माण करती तथा सकारात्मक परिवर्तन के प्रेरक के रूप में कार्य करती है। प्रदूषण चाहे वातावरण में हो या शरीर के अंदर दोनों ही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। शिक्षकों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक होना पड़ेगा तथा अपनी जिम्मेदारी को निभाना होगा। शिक्षको को भी पर्यावरण के प्रति चिंतनशील होना चाहिए तथा समाज में पर्यावरण संरक्षण के लिए सशक्त और सक्रिय नागरिक के रूप में अपना योगदान देकर पर्यावरण की सुरक्षा में सहायक बन सकते है। इस प्रकार छात्रों को सशक्त और सक्रिय पर्यावरण संरक्षण के रूप में तैयार कर सकती है। शिक्षा नीति निर्माताओं ने इस नई शिक्षा नीति 2020 में पर्यावरणीय शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाहित कर एक नई दिशा प्रदान किया तथा शिक्षकों को भी पर्यावरण पर विशेष ज्ञान छात्रों को देना चाहिए पर्यावरणीय ज्ञान वर्तमान समय में बहुत ही आवश्यक है। पूरे विश्व में पर्यावरण में जो परिवर्तन हमें दिखाई पड़ रहा है। इन सबके पीछे हम सभी लोग जिम्मेदार हैं, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को लेकर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यकता से अधिक होने के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इस चुनौतियों से निपटने के लिए हमें शिक्षा नीति में पर्यावरण को समाहित कर शिक्षक तथा छात्रों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता में वृद्धि करना यह तभी संभव है जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में छात्रों की जागरूकता और जिम्मेदारी को बढ़ाने में शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो वे छात्रों को प्रेरित कर सकते हैं। कि पर्यावरण सुरक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें और सामाजिक जिम्मेदारी निभाए इसके साथ ही शिक्षक छात्रों को प्रेरित सकते हैं कि पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान की दिशा में योगदान करे और अपने भविष्य के साथ-साथ पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में सहयोग प्रदान

करें। एक जिम्मेदार नागरिक के कर्तव्यो का निर्वहन करें। इस प्रकार शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता छात्रों की जागरूकता और जिम्मेदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, और छात्रों को सशक्त और सक्रिय पर्यावरण संरक्षण के रूप में तैयार कर सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए पर्यावरणीय शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाहित करना महत्वपूर्ण कार्य किया है। पर्यावरणीय मुद्दे भारत में ही नहीं संपूर्ण विश्व में पर्यावरण का संकट दिखलाई पड़ रहा है तथा इस संकट से निकलने के लिए हमें पूरे विश्व को शिक्षण संस्थानों में पर्यावरण के पाठ्यक्रम को अनिवार्य रूप से लागू करना पड़ेगा तथा शिक्षकों की सलाह और दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होते है हमारी भारतीय सभ्यता व संस्कृति में भी जहां वृक्षो पूजा की जाती है, तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांत को मानती है। संपूर्ण विश्व एक परिवार है इस परिवार में पर्यावरण की सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझना पड़ेगा इस नई शिक्षा नीति में पर्यावरणीय शिक्षा को समर्पित करने के लिए शिक्षकों के विचारों और अनुभवों का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है तथा इस प्राकृतिक असंतुलन को ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को छात्रों को अवगत कराना तथा मानव जीवन को कैसे सुरक्षित रखा जाए प्रकृति की नजर में सभी जीव जन्तु एक समान है। मौसम का असर सभी पर एक साथ दिखलाई पड़ता है। शिक्षा नीति निर्माताऔ के लिए शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता से मिलने वाली विचार और सुझाव उन्हें यह समझने में मदद कर सकते हैं कि कैसे पर्यावरणीय शिक्षा को बेहतर तरीके से समाहित किया जा सकता है। छात्रों को उनकी सामाजिक जागरूकता की जिम्मेदारियो को सक्रिय बनाया जा सकता है।

प्राचीन काल में मानव जंगलों व गुफाओं में रहा करता था। आज वही मानव सीटी, मेट्रो सीटी, टाऊन इत्यादि में निवास कर रहा है। सड़कों, एयरपोर्ट, खदानों, जल के बेतहास दोहन, औद्योगिकरण, नगरीकरण जनसंख्या वृद्धि ने प्राकृतिक संसाधनों पर इसका असर परिलक्षित होता है जहां पर्यावरण में परिवर्तन से कहीं बहुत गर्मी तो कहीं बहुत बारिश प्राकृतिक आपदाएं विश्व में बहुत बढ़ गयी है। यह सब पर्यावरण के असंतुलन के कारण हो रहा है। जलवायु परिवर्तन स्पष्ट रूप से हमें दिखाई पड़ रहा है। यही हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो पाठ्यक्रम में इसको शामिल कर पर्यावरण के प्रति शिक्षक व छात्रों को एक साथ मिलकर सामाजिक जागरूकता के माध्यम से लोगों के विचारों में पर्यावरण के प्रति परिवर्तन या बदलाव लाना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी विश्व में पर्यावरण पर अपनी चिंता स्पष्ट रूप से दिखलाई है तथा 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस भी मनाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने पर्यावरण के पाठ्यक्रम

को सभी शिक्षण संस्थानों में अनिवार्य रूप से शामिल करना पर्यावरण सुरक्षा को एक नई शिक्षा नीति प्रदान की है।

संदर्भ :-

1. अलबलूशी एस. एम. (2014) - छात्रों के पर्यावरणीय ज्ञान और विज्ञान दृष्टिकोण पर पर्यावरणीय विज्ञान परियोजनाओ का प्रभाव।

2. कोस्तोवा जेड़ और अटासोय (2008) - पर्यावरण शिक्षा में सफल शिक्षण के तरीके।

3. नागरा के (2010) - स्कूली शिक्षकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता।

4. आउटलुक

5. दैनिक जागरण।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM